वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 250 रविवार 7 जनवरी 2024 | दैनिक ई-पेपर

# शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

# भजनलाल सरकार का नौकरशाही में पहला बड़ा फेरबदल

## 72 आईएएस और 121 आरएएस अधिकारियों के तबादले

**जयपुर. कासं**

राज्य की भाजपा सरकार में मंत्रिमंडल गठन और विभागों के बंटवारे के बाद अब नौकरशाही में पहला बड़ा फेरबदल किया गया है। शुक्रवार देर रात कार्मिक विभाग ने 72 आईएएस अधिकारियों और 121 आरएएस अधिकारियों के तबादले की सूची जारी की है। तबादला सूची को लेकर पिछले कई दिनों से मुख्यमंत्री स्तर पर मंथन चल रहा था। जानकार सूत्रों की मानें तो नौकरशाओं के तबादलों में मंत्री और विधायकों की पसंद को ध्यान में रखा गया है। भजनलाल सरकार की ओर से ब्यूरोक्रेसी में किए गए पहले बड़े फेरबदल में 36 जिलों के कलक्टर भी बदले गए हैं, जिन्हें 27 पुराने जिले और 9 जिलों की कलक्टर भी शामिल है। हालांकि आईएएस अधिकारियों की तबादला सूची में कोई बड़े चेहरे शामिल नहीं किए गए हैं। बताया जा रहा है कि 36 कलक्टर के तबादलों में भी मंत्रियों की राय को अहमियत दी गई है। जयपुर हैरिटेज और जयपुर ग्रेटर नगम निगम के आयुक्त भी बदले गए हैं। जयपुर हैरिटेज आयुक्त राजेंद्र सिंह शेखावत को राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग में सचिव लगाया गया है। उनकी जगह अभिषेक सुराणा हैरिटेज निगम आयुक्त लगाया गया है। इसी प्रकार जयपुर ग्रेटर में रुक्ष्मणि रियार को आयुक्त लगाया गया है। इससे पहले हनुमानगढ़ कलक्टर के पद पर तैनात थीं। इसके अलावा अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर नगर निगम, उदयपुर नग्न निगम में आयुक्त बदले गए हैं। चूरू कलक्टर रहे सिद्धार्थ सिहाग को मुख्यमंत्री का संयुक्त सचिव लगाया गया है। सूची में तीन आईएएस अधिकारियों को अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। उदयपुर के संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट को राजस्थान राज्य खान खनिज निगम लिमिटेड उदयपुर का प्रबंध निदेशक, कृषि एवं पंचायती राज विभाग जयपुर के आयुक्त कन्हैया लाल स्वामी को प्रबंध निदेशक राजस्थान राज्य भंडारण निगम जयपुर और देवस्थान विभाग जयपुर की आयुक्त प्रज्ञा केवलरामानी को आयुक्त टीएडी उदयपुर का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है।

### एपीओ चल रहे पांच अधिकारियों को भी पोस्टिंग

एपीओ चल रहे पांच आईएएस अधिकारियों को भी तबादला सूची के जरिए पोस्टिंग दी गई है। गौरव बुड़ानिया को एसडीएम ब्यावर, रिया डाबी को एसडीएम गिर्वा(उदयपुर), रवि कुमार को एसडीएम भरतपुर, आव्हाद निवृत्ती सोमनाथ को एसडीएम भीलवाड़ा, जुईकर प्रतीक चंद्रशेखर को एसडीएम अलवर और सालुखे गौरव रविंद्र को एसडीएम माउंट आबू लगाया गया है। इसके अलावा ताराचंद मीणा को अगले आदेशों तक एपीओ रखा गया है।

### 27 पुराने और 9 नए जिलों के कलक्टर बदले

27 पुराने जिलों में बारां, बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, जोधपुर, पाली, भीलवाड़ा, अलवर, जैसलमेर, बीकानेर, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, कोटा, डूंगरपुर, झुंझुनूं, सिरोही, सवाईमाधोपुर, दौसा, सीकर, राजसमंद, करौली, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, टोंक, बूंदी, राजसमंद के कलक्टर्स के तबादले किए हैं। नए जिलों में केकड़ी, बालोतरा, फलौदी, अनूपगढ़, बहरोड़, डीडवाना-कुचामन, गंगापुरसिटी, सलूम्बर, ब्यावर के कलक्टर बदले गए हैं।

# आईएएस टीना डाबी की बहन के लिए खुशियां लेकर आया नया साल, राजस्थान सरकार ने दी यह अहम जिम्मेदारी

**जयपुर. कासं**

राजधानी जयपुर में चल रहे तीन दिवसीय पुलिस महानिदेशक और महानिरीक्षक कान्फ्रेंस के बीच भजनलाल सरकार ने शनिवार को बड़ा प्रशासनिक फेरबदल किया है। राज्य सरकार ने शनिवार को 72 आइएएस और 121 आरएएस अधिकारियों के तबादले किए हैं। इनमें कई जिलों के कलक्टर बदल दिए गए हैं। लगभग सभी जिलों में कई एडीएम और एसडीएम भी बदले गए हैं। प्रशासनिक फेरबदल के बीच 2015 बैच की यूपीएससी टॉपर आईएएस अधिकारी टीना डाबी की छोटी बहन रिया डाबी को लेकर बड़ी खबर आई है। पिछले कुछ समय से एपीओ चल रिया डाबी को नए साल पर सरकार ने गुड न्यूज दी है। 2021 बैच की आईएएस अधिकारी रिया को राज्य सरकार ने उदयपुर के गिर्वा में उपखंड अधिकारी (एसडीएम) पद पर लगाया है। एसडीएम बनने से पहले रिया अलवर में असिस्टेंट कलक्टर के पद पर भी सेवाएं दे चुकी हैं। आपको बता दें कि टीना डाबी की तरह रिया को भी राजस्थान कैडर मिला था। वहीं, उनकी बड़ी बहन टीना जैसलमेर की कलक्टर रह चुकी हैं। वर्तमान में वह मैटरनिटी लीव पर चल रही हैं। रिया पिछले साल उस समय चर्चा में आई जब उन्होंने गुपचुप तरीके से भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के अधिकारी मनीष कुमार से कोर्ट मैरिज कर ली थी। दोनों की लव मैरिज है। रिया और मनीष दोनों ही एससी समुदाय से आते हैं। रिया को ऑल इंडिया रैंक 15 मिली थी। हालांकि, मनीष को महाराष्ट्र कैडर मिला था। उन्हें भी अब राजस्थान कैडर अलॉट हो गया है। रिया की बड़ी बहन टीना के पति प्रदीप गंवाडे भी राजस्थान कैडर के आईएएस अधिकारी हैं। आईएएस प्रदीप से शादी करने से पहले टीना ने उनके ही बैच के आईएएस अधिकारी अतहर आमिर खान से शादी की थी। हालांकि, यह शादी ज्यादा नहीं चली और दोनों का तलाक हो गया। जम्मू कश्मीर के रहने वाले अतहर को भी राजस्थान कैडर अलॉट हुआ था। लेकिन, तलाक के बाद अतहर डेपुटेशन पर अपने गृह राज्य में सेवाएं दे रहे हैं।

2900वें जन्मकल्याणक पर विशेष

# जैन तीर्थ नैनागिरि में प्रथम बार आया था तीर्थंकर पार्श्वनाथ का समवशरण

संकलन रत्नेश जैन/राजेश रागी बकस्वाहा

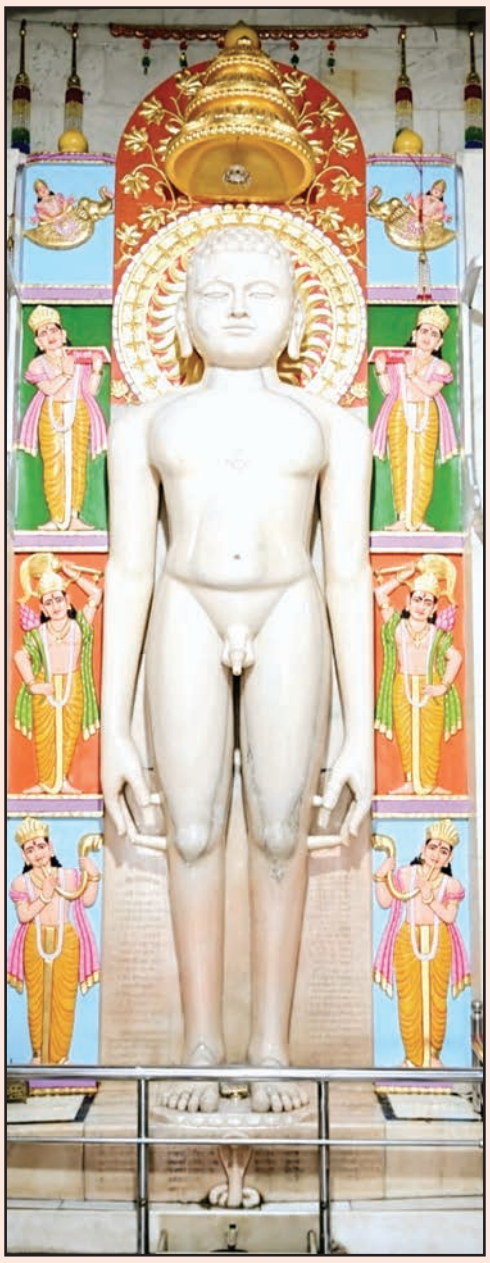

नैनागिरी (मनोज नायक) जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से पांच तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में हुआ और चार तीर्थंकरों का जन्म काशी, वाराणसी में हुआ था। जैन धर्म के अंतिम और चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर से लगभग 300 वर्ष पूर्व अर्थात आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के तिरासी हजार सात सौ पचास वर्ष बाद काशी (बनारस) के राजा काश्यप गोत्रीय अश्वसेन तथा रानी वामादेवी के घर पौषकृष्ण एकादशी के दिन अनिल योग में हुआ था। शास्त्रों के अनुसार तीर्थंकर पार्श्वनाथ के शरीर की कांति धान के छोटे पौधे के समान हरे रंग की थी। मान्यता यह है कि पूर्व जन्मों की श्रृंखला में पार्श्वनाथ पहले भव (जन्म) में ब्राह्मण पुत्र मरुभूति थे तथा उन्हीं के बड़े भाई कमठ ने द्वेषवश उन पर पत्थर की शिला पटककर उनका प्राणांत कर दिया था। वही कमठ विभिन्न जन्मों में उनके साथ अपना वैर निकालता रहा। किन्तु समता स्वभावी तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने किसी जन्म में कभी उसका प्रतिकार नहीं किया और वे प्रत्येक विपत्तियां धैर्यपूर्वक सहन करते रहे। फलस्वरूप अंतिम भव में पार्श्वनाथ का जन्म एक राजघराने में हो गया। किन्तु राजा के यहां सुलभ संसार की सभी भोग संपदाएं विरक्त पार्श्वनाथ को आसक्त नहीं बना सकीं। तीस वर्ष की युवावस्था में वे प्रव्रजित (वैरागी) हो गए। पार्श्व पुराण के अनुसार एक दिन वे देवदारु वृक्ष के नीचे ध्यान में लीन बैठे थे। उसी समय कमठ (जो इस जन्म में शंबर नाम का असुर था) आकाश मार्ग से जा रहा था। उसने पार्श्वनाथ को तपस्या करते देखा तो उसे पूर्व जन्मों का बैर स्मरण हो गया। उनसे पुनः बदला लेने के लिए वह उनपर महागर्जना तथा महावृष्टि करने लगा। इसी बीच एक वही सर्प का जोड़ा धरणेंद्र और पद्मावती के रूप में महायोगी पार्श्वनाथ की रक्षा के लिए स्वतः आ गया,जिसको राजकुमार पार्श्व ने मरते समय महामंत्र सुनाया था। उन्होंने उनके मस्तक पर अपना फन फैलाकर कमठ के उपसर्ग (व्यवधान) से उनकी रक्षा की भावना और प्रयास किया। इन सभी घटनाओं से भी विरक्त पार्श्वनाथ अपनी तपस्या से विमुख नहीं हुए और उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हो गई। कैवल्य ज्ञान प्राप्त होने के बाद उनका समवशरण (धर्मसभा) श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि नैनागिरि के अलावा भारत के विभिन्न स्थलों पर लगा, जहां उन्होंने उपदेशों के माध्यम से सभी जीवों को आत्मकल्याण का मार्ग बतलाया। उन्होंने लगभग सत्तर वर्ष तक विहार किया। उनके समवशरण में स्वयंभू आदि लेकर दस गणधर थे , सोलह हजार मुनिराज तथा 38000 दीक्षित आर्यिकायें थीं , जिसमें प्रमुख आर्यिका का नाम सुलोचना था। एक लाख श्रावक थे और तीन लाख श्राविकाएं थीं । अंत में वर्तमान के झारखण्ड प्रदेश में स्थित सम्मेद शिखर पर प्रतिमा योग धारण कर विराजमान हो गए और श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन वहीं सम्मेद शिखर से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई थी । उस समय इनकी मुक्ति के साथ साथ 3600 मुनि भी मोक्ष गए थे और उसके अनंतर तीन वर्ष के भीतर इनके 6200 शिष्य मुनिगण को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। वर्तमान में यह सम्मेद शिखर जैन धर्मावलम्बियों का महान पवित्र तीर्थ क्षेत्र है। इसे पार्श्वनाथ हिल के नाम से भी ख्याति प्राप्त है । बारहवीं शती के हरियाणा के जैन कवि बुध श्रीधर ने अपभ्रंश भाषा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन पर आधारित ''पासणाहचरिउ'' लिखा है जिसकी प्रशस्ति में उन्होंने दिल्ली के हिन्दू सम्राट अनंगपाल के बारे में तथा दिल्ली के तत्कालीन इतिहास की जानकारी दी है अन्यथा मुगल सल्तनत के पूर्व की दिल्ली का इतिहास जानना बहुत मुश्किल हो गया था। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के मंदिर भारत में हजारों की संख्या में हैं जिसमें तीर्थंकर भगवान पारसनाथ की समवशरण स्थली - श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि नैनागिरि तहसील बकस्वाहा जिला छतरपुर मप्र का पारसनाथ मंदिर , बिजौलिया के पार्श्वनाथ , सूरत का चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर , द्रोणगिरि का पार्श्वनाथ मंदिर , महुवा के विघ्नहर पार्श्वनाथ , दिल्ली चांदनी चौक का प्रसिद्ध लाल जैन मंदिर आदि अन्यान्य मंदिर बहुत ही ज्यादा प्रसिद्ध हैं । खजुराहो का पार्श्वनाथ मंदिर विश्व प्रसिद्ध है । वाराणसी , काशी में भेलूपुर स्थित श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर उनका जन्म स्थान माना जाता है । तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अतिशय क्षेत्रों में अहिच्छत्र पार्श्वनाथ, वागोल पार्श्वनाथ, नागफणी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर पार्श्वनाथ, अन्देश्वर पार्श्वनाथ, अड़िन्दा पार्श्वनाथ, बिजौलियां पार्श्वनाथ, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, मक्सी पार्श्वनाथ, महुवा-पार्श्वनाथ आदि अन्यान्य तीर्थ क्षेत्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इनका चिन्ह सर्प है और उनकी पहचान मस्तक के ऊपर सर्प के फण से की जाती है, यद्यपि बिना फण वाली प्रतिमाएं भी प्राचीन काल से ही मिलती हैं तथापि प्रायः प्रतिमाएं फणयुक्त ही होती हैं। आचार्यों और विद्वानों ने उनकी स्तुति में हजारों स्तुतियाँ स्तोत्र लगभग हर भाषा में लिखे हैं। जैन भक्ति साहित्य का आधा से अधिक भाग तीर्थंकर पार्श्वनाथ को ही समर्पित हैं । जैन परम्परा में अधिकांश तंत्र मंत्र का संबंध पार्श्वनाथ की उपासना से ही है। वर्तमान में सुप्रसिद्ध भजन ह्य तुमसे लागी लगन , ले लो अपनी शरण , पारस प्यारा। प्रत्येक भक्त के कंठ का हार बना हुआ है । जैन परंपरा में अधिकांश तंत्र मन्त्र का सम्बन्ध भी पार्श्वनाथ की उपासना से ही है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन में कष्टों में भी समता भाव धारण करने का एक महान उदाहरण है। आज हमारे जीवन में भी थोड़ी-सी अनुकूलता हो तो हम फूले नहीं समाते और जरा-सा कष्ट हो तो हाय-तौबा मच देते हैं। हमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि कष्ट और विपत्ति में भी हम कैसे दुखों से निस्पृह बने रह सकते हैं। उनसे हम सुख-दुःख में समता की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं और अपना जीवन सुखी बना सकते हैं। यहां यह भी स्मरणीय है कि जैन तीर्थक्षेत्र रेशंदीगिरि नैनागिरि पर ईसा पूर्व वर्ष 706 में भगवान पारसनाथ के प्रथम समवशरण (धर्मसभा) की रचना की गई थी, जिसमें दिव्य ध्वनि/देशना खिरी थी , जिस दिव्य देशना से इस रेशंदीगिरि नैनागिरि तीर्थ के चारों ओर की योजनों प्रमाण भूमि आज भी पवित्र है , उन्हीं की इस दिव्य देशना को अविस्मरणीय बनाने व पुण्य स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के लिए क्षेत्रराज पर विविध निर्माण व गतिविधियां चलती आ रही है और क्षेत्रराज के गिरिराज पर भगवान पारसनाथ के प्रथम मंदिर का वर्ष 1050 में निर्माण किया गया था, जिसका जीर्णोद्धार वर्ष 1564 में श्री श्यामले ब्या द्वारा कराया गया था। गिरिराज पर स्थित विशाल भव्य चौबीसी जिनालय के पीछे करीब 14 एकड़ से अधिक भूमि परिसर में देशना स्थली की परिकल्पना को साकार रुप देने के लिए कमेटी प्रयासरत है, जिस स्थली में विशाल भव्य जिनालय निमार्णाधीन है, जिसमें विराजमान हुए अष्ट धातु की 6 फीट से अधिक उत्तुंग विश्व की अद्वितीय मनोज्ञ पदमाशन त्रय जिनबिम्ब विराजमान की जाकर गत माह 04 से 10 दिसम्वर 2023 तक राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज ससंघ (41पिच्छी) के सान्निध्य में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन में प्रतिष्ठित कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यहां के गिरिराज पर विशाल भव्य चौवीसी जिनालय में भगवान पारसनाथ की देश की अद्वितीय खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं जिसकी विशेषता यह कि भगवान पारसनाथ के मूल शरीर के अवगाहन अनुरूप ही यह प्रतिमा विराजमान हैं जो विश्व में कहीं दूसरी जगह नहीं है। यहां के विशाल पारस सरोवर (तालाब) में स्थित विशाल भव्य समवशरण की रचना से युक्त जिनालय की प्रतिमाओं का सन 1987 में संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव सअतिशय के साथ सम्पन्न हुआ था , जो विश्व में अद्वितीय है ।आचार्य कुंदकुंद ने ईसा की प्रथम शताब्दी में विरचित प्राकृत निर्वाणकांड में इस रेशंदीगिरि नैनागिरि तीर्थ की वंदना की है।

(संकलनः
रत्नेश जैन/राजेश रागी बकस्वाहा)

# आज अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभ जी एवं तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक दिवस

अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ का चन्द्रपुर नगर में इक्ष्वाकुवंशीय राजा महासेन की रानी लक्ष्मणा देवी के गर्भ से जन्म हुआ । चन्द्रप्रभ का जन्म 7वें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वजी के 900 करोड़ सागर के बाद हुआ। पूर्व भव के अहमिंद्र अपनी आयु पूर्ण कर जयंत विमान से संबंध छोड़कर चन्द्रपुर में माता लक्ष्मणा के गर्भ में आये एवं गर्भ का समय बीत जाने पर पौष कृष्ण एकादशी के दिन अनुराधा नक्षत्र में मति, श्रुति, अवधि ज्ञान से भूषित एक बालक का जन्म हुआ। उसी समय देवों ने बालक का मेरु पर्वत पर ले जाकर जन्माभिषेक किया और चंद्रप्रभ नाम रखा। चंद्रप्रभु के शरीर का वर्ण चन्द्रमा के समान श्वेत था, आयु दस लाख वर्ष पूर्व थी एवं कद 150 धनुष ऊंचा था एवं रंग चंद्रमा के समान धवल था। दो लाख पचास हजार वर्ष बीत जाने पर उन्हें राज्य विभूति प्राप्त हुई थी। उनका विवाह कई कुलीन कन्याओं के साथ हुआ था। चंद्रप्रभु का राज्यकाल साढ़े 6 लाख पचास हजार वर्ष पूर्व एवं 24 पूर्वांग रहा। श्री चंद्रप्रभ जी को दर्पण में अपना मुंह देखने पर उन्हें अपने मुंह पर कुछ विकार दिखाई दिए एवं विचार किया की शरीर को कितना ही सजाया जाय, पर काल पाकर यह अंततः सम्पूर्ण नष्ट ही हो जाता है। इस तरह अनित्य -अशरण आदि भावनाओं का चिंतवन करने से वैराग्य की भावना बलवती हो गई एवं अपने पुत्र चंद्र को राज्य देकर देवनिर्मित विमला पालकी पर सवार हो सर्वर्तुक वन में पंहुचकर सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार कर पौष कृष्ण एकादशी के दिन अनुराधा नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ निर्ग्रंथ मुनि के रूप में दीक्षा ग्रहण की । उसी समय उन्हें मनः पर्यय ज्ञान प्राप्त हो गया था । चंद्रप्रभु को 3 माह के तप के बाद नाग के वृक्ष के नीचे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई । समवशरण के मध्य स्थित होकर दिव्य ध्वनि के द्वारा कल्याणकारी उपदेश दिया। उनके समवशरण में दत्त आदि 93 गणधर थे, दो हजार द्वादशांग के जानकार, दो लाख चारसौ शिक्षक, दस हजार केवली, चौदह हजार विक्रिया ऋद्धि धारी, आठ हजार मनपर्यय ज्ञानी, सात हजार छह सौ वादी थे । इस तरह कुल मिलाकर ढाई लाख मुनि राज थे । वरुण आदि तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकाऐं थी। तीन लाख श्रावक और पांच लाख श्राविकाएं थी। असंख्यात देव-देवियां और असंख्यात तिर्यंच थे। उन्होंने अनेक जगह घूम - घूम कर धर्म तीर्थ की प्रवृत्ति की । अंत में सम्मेदशिखरजी पर आकर प्रतिमा योग धारण किया एवं पूर्व दिशा में स्थित ललित कूट से मोक्ष प्राप्त किया। चंद्रप्रभ जी का तीर्थकाल 90 करोड़ सागर चार पूर्वांग का रहा। चंद्रप्रभ भगवान की ध्यानयोग की साधना वास्तव में भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे आत्मसाधना थी। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करूणा और कल्याण की भावना रखे । 23वें तीर्थंकर पार्श्व प्रभु , जिन्हे पारसनाथ भी कहा जाता है, का जन्म काशी ( बनारस ) में महारानी वामा देवी के गर्भ से वर्तमान उत्तर प्रदेश में हुआ । पारसनाथ जी प्राणत स्वर्ग में आयु पूर्ण कर इस धरा पर ( बनारस/काशी ) जन्में। पारस प्रभु का जन्म 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ जी के 83 हजार 650 वर्ष बाद हुआ।पारस प्रभु का शरीर हरित श्याम रंग का था। पारस प्रभु की आयु मात्र सौ वर्ष थी एव कद साढ़े 13 फुट ( 9 हाथ ) था। पारस प्रभु ने ना राज्य किया, न ही विवाह किया। पारस प्रभु का जन्म उग्र वंश में राजा विश्वसेन के महल में हुआ। पारसप्रभु जातिस्मरण से वैराग्य की ओर बढ़े। उन्हे दीक्षा की ओर बढ़ते देख एक ही दिन पौष कृष्ण एकादशी को 300 और राजा दीक्षा के लिए बढ़े। तप के दौरान कमठ द्वारा उपसर्ग किया गया।चार महीने तप के बाद पारस प्रभु को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। पारसप्रभु के 10 गणधर थे। सम्मेदशिखरजी से पारसप्रभु ने उसके विपरीत पश्चिम दिशा में स्वर्णभद्र कूट से मोक्ष प्राप्त किया। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया।

उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। जयपुर के दक्षिणी भाग में स्थित दुगार्पुरा जैन मंदिर में तीन वेदियां हैं एवं मुख्य वेदी में मूलनायक चंद्रप्रभ भगवान है जिनकी प्रतिष्ठा संवत 1283 में आज से 797 वर्ष पूर्व हुई है, बाईं ओर की वेदी में मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान है जिनकी प्रतिष्ठा संवत 1568 अर्थात 512 वर्ष पूर्व हुई है एवं दाईं ओर की मूल वेदी में मूलनायक चंद्रप्रभ भगवान विराजित है जिनकी प्रतिष्ठा संवत 1666 यानी 414 वर्ष पूर्व हुई है । तीनों वेदियों में विराजित मूलनायक तीर्थंकर चंद्रप्रभ भगवान एवं तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान है आज जिनके जन्म एवं तप कल्याणक के अवसर पर समाज को उत्सव मनाने का अवसर मिला है ।

**संकलन**
**भागचंद जैन मित्रपुरा**
**अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम जयपुर**

## वेद ज्ञान

### इंसान को अपनी गलतियों को सुधारना चाहिए

अक्सर लोग दूसरे व्यक्ति की छोटी से छोटी गलती तलाशने में जरा भी देरी नहीं लगाते। वहीं वे अपनी बड़ी से बड़ी गलती को भी नजरअंदाज करते हैं। जो सहजता से अपनी गलती मान लेता है, वह जीवन में सकारात्मक सोच और अध्यात्म की दिशा में जीवन के पथ पर आगे बढ़ता है। अपनी गलती सबके सामने स्वीकार करने का साहस विरले लोग ही दिखा पाते हैं। अधिकांश लोग यही चाहते हैं कि उनकी गलतियां छिपी रहें, दूसरों के सामने प्रकट न हों। यहां तक कि गलती सामने आने पर वह उससे मुकरने में भी देरी नहीं लगाते। ऐसा करके वे दूसरे लोगों को मूर्ख बना सकते हैं, लेकिन उनका स्वयं का अंतर्मन इस बात को जानता है कि वे गलत हैं। खाली समय मिलने पर अंतर्मन में अक्सर गलती वाली बात हर इंसान को कचोटती है। कई इंसान जो संकोची प्रवृत्ति के साथ ही संवेदनशील भी होते हैं, उनके अंदर तो यह बात इस हद तक घर कर जाती है कि उनका मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो जाता है। इंसान को गलतियों का पुतला माना गया है। इसलिए यह सार्वभौमिक सत्य है कि हर इंसान कहीं न कहीं और कभी न कभी गलती करता ही है। गलती करना इंसान का कार्य है तो उस गलती को स्वीकार करना भी इंसान का ही कार्य है। अपनी गलती और जिद पर अड़े रहने वाले व्यक्ति को समाज सम्मान नहीं देता है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि जो व्यक्ति अपनी असफलताओं और गलतियों को मान लेते हैं, उनका जीवन पहले से अधिक सुंदर हो जाता है। उनमें आत्मविश्वास और सद्गुणों का विकास होता है। ऐसे व्यक्ति जो स्वयं की गलती स्वीकार नहीं करना चाहते, उनमें धीरे-धीरे नकारात्मक गुणों का विकास होने लगता है। गलती छिपाने के लिए इंसान को अक्सर असत्य बातों को बोलना पड़ता है। ये असत्य बातें ऐसे व्यक्तियों के जीवन का एक अंग बन जाती हैं। गलती स्वीकार करना एक साहसिक कार्य है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर के अधिक निकट पहुंच जाता है। जो अपनी गलती स्वीकार करने का साहस नहीं रखते, उनके अंदर से प्रेम, दया और कर्तव्य का लोप हो जाता है। ऐसे लोग अपने और अपनी जरूरतों के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

## संपादकीय

# अधिकारियों की औपनिवेशिक मानसिकता बरकरार

प्रशासनिक अधिकारियों की आम लोगों से दूरी इसीलिए बढ़ती गई है कि वे अपने ओहदे के अहंकार से बाहर निकल ही नहीं पाते। अधिकारी प्रायः अपने आसपास आतंक का ऐसा घेरा बनाए रहते हैं कि लोग उन तक सामान्य तरीके से पहुंच ही नहीं पाते। अगर किन्हीं स्थितियों में वे आम लोगों के बीच घिर जाते हैं या मजबूरी में उन्हें उनके बीच जाना पड़ता है, तब भी उनकी कोशिश यही रहती है कि उनके रुतबे का दबदबा कायम रहे। दो दिन पहले ट्रक चालकों की हड़ताल के समय मध्यप्रदेश में शाजापुर के जिलाधिकारी ने भी इसी प्रवृत्ति के चलते अपनी हनक दिखाते हुए चालकों की ''औकात'' पर सवाल खड़े कर दिए। इसे लेकर खासा बवाल हुआ। अच्छी बात है कि राज्य के मुख्यमंत्री ने मामले का संज्ञान लेते हुए तत्काल जिलाधिकारी को वहां से हटा दिया। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार अधिकारियों से ऐसी भाषा की अपेक्षा नहीं करती और न बर्दाश्त कर सकती है। न जाने दूसरे

अधिकारियों ने इस प्रकरण से क्या सबक लिया है। मगर इससे एक बार फिर यह सवाल गाढ़ा हुआ है कि लोकसेवक आखिर कब लोक की सेवा का अपना कर्तव्य समझे और आम लोगों से तालमेल बिठा कर अपने सामाजिक कल्याण के दायित्व का निर्वाह सीखेंगे। प्रशासनिक अधिकारी आमजन और सरकार के बीच एक मजबूत कड़ी होते हैं, जो न सिर्फ सरकारी योजनाओं को सही और प्रभावी ढंग से लागू करते, बल्कि स्थानीय समस्याओं की तरफ सरकार का ध्यान भी आकर्षित करते हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि लोगों के बीच रह कर उनकी समस्याओं को सुने-समझेंगे और उनके समाधान का हर संभव प्रयास करेंगे। मगर स्थिति यह है कि आजादी के बाद लोकतंत्र की स्थापना के बावजूद जिलाधिकारियों की औपनिवेशिक मानसिकता बदल नहीं पाई है। वे जनता का सेवक बन कर काम करने के बजाय शासक बन कर रहना ज्यादा पसंद करते हैं। स्थिति यह है कि अगर कोई उनके खिलाफ अंगुली उठा देता या उठाने का प्रयास करता है, तो वे उसके दमन पर उतर आते हैं। इस तरह भय का वातावरण बना कर मनमाने ढंग से काम करने की कोशिश करते हैं। प्रशासन से पारदर्शिता गायब है। यही वजह है कि शाजापुर के जिलाधिकारी ने ट्रक चालकों को भय दिखा कर आंदोलन से दूर हटाने का प्रयास किया। जबकि उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे आंदोलनकारियों की बात सुनें और उनकी मांगों पर समुचित कार्रवाई का भरोसा दिलाएं। मगर नौकरशाही में ऐसी सलाहियत शायद सिरे से गायब होती जा रही है। प्रशासनिक सुधार संबंधी अनेक सुझाव समय-समय पर सरकारों को सौंपे गए, मगर उन्हें अमली जामा पहनाने का कोई गंभीर प्रयास नहीं हुआ। इसी का नतीजा है कि सत्तापक्ष अपनी मंशा के अनुरूप नौकरशाही का इस्तेमाल करता रहा है। प्रशासनिक अधिकारियों में भी सत्ता से करीबी कायम कर 'लाभ' की जगहों पर पहुंचने की होड़ देखी जाती है। मध्य प्रदेश के जिस जिलाधिकारी को अपदस्थ किया गया, वे भी इस मानसिकता से मुक्त नहीं माने जा सकते। **-राकेश जैन गोदिका**

## परिदृश्य

# पुराने मिथक

सामाजिक क्षेत्र के अनेक दिग्गजों के दिलो-दिमाग पर पुराने मिथकों की मजबूत पकड़ है। परोपकारियों और दानदाताओं से लेकर नागरिक समाज संगठनों, नीति निर्माताओं तक मिथकों का बड़ा जोर है। हमें अपने कामकाज में अधिक प्रभावी बनने और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए इन मिथकों को तोड़ना चाहिए। सच्चाइयों का सामना करना चाहिए। आइए कुछ व्यापक, पर समस्या पैदा करने वाले मिथकों के बारे में जानें। **स्थिरता का मिथकः** यह धारणा है कि कोई समुदाय सुधार और बदलाव से आत्मनिर्भर होकर स्थिर हो सकता है। चाहे वह एक गांव हो या एक बड़ी राज्य प्रणाली, यह एक मिथक है। इसके पीछे धारणा यह है कि अच्छी चीजों को एक जगह जुटाया जा सकता है, जहां बाहरी समर्थन या हस्तक्षेप की जरूरत ही न रह जाए। हालांकि, सामाजिक क्षेत्र का हर अनुभव एक ही कहानी बयान करता है कि कुछ भी अपने आप कायम या स्थिर नहीं रहता। समाज, व्यवस्था को आंतरिक और बाहरी ताकतें (राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक) लगातार प्रभावित करती हैं। इस गतिशील मानव रंगमंच पर जो कुछ भी हासिल किया गया है, उसे कहीं न कहीं से निरंतर पोषण और ऊर्जा की जरूरत पड़ी है, अन्यथा चीजें पीछे की ओर खिसक जाती हैं या भटक जाती हैं। मिसाल के लिए, कुछ पंचायतों ने तय किया कि कोई बाल विवाह न हो या किसी के साथ जाति के आधार पर भेदभाव न किया जाए। दानदाता या सुधारकों ने जब समझा कि यह लक्ष्य हासिल हो गया है, तब उन्होंने अपना काम बंद कर दिया। अब चूंकि पंचायतें एक व्यापक समाज का हिस्सा होती हैं, तो वहां कुछ ऐसी ताकतें हमेशा सक्रिय रहती हैं, जो सुधार के खिलाफ काम करती हैं। वास्तव में, समाज में किसी भी अच्छे नतीजे को बनाए रखने का संघर्ष सतत है, क्योंकि सब कुछ क्षणभंगुर है, जो अच्छा है, वह तो और भी ज्यादा। **पैमाना संबंधी मिथकः** क्या मानवीय संबंधों को मापा जा सकता है? क्या सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को मापा जा सकता है? समाज गतिशील है, तो उसमें बनने वाले रिश्ते भी गतिशील हैं। सबकी अपनी-अपनी विशिष्टता के चलते रिश्तों को मापा नहीं जा सकता। मापना सामाजिक क्षेत्र में कल्पना मात्र है। यह स्वीकार करना इतना कठिन क्यों है कि मनुष्य मशीन नहीं हैं और समाज कारखाना नहीं हैं? **व्यवस्था में बदलाव संबंधी मिथकः** किसी व्यवस्था में अनेक चीजें शामिल रहती हैं। सिस्टम या व्यवस्था जैसा शब्द अब इतनी बार इस्तेमाल होता है कि हम इसकी जटिलता और विशालता को भूल जाते हैं। दानदाताओं और समाजसेवियों का दावा है कि वे सिस्टम में बदलाव के लिए काम करते हैं। अक्सर स्मार्ट लोगों का एक समूह किसी स्थान पर बैठकर सिस्टम के लिए नीति निर्माण, प्रशासनिक पहल और जमीनी स्तर पर काम की योजना बनाता है। यह साफ तौर पर अहंकार है और ऐसे सभी दावेदारों को सिस्टम में होने वाले बदलावों पर ईमानदारी से विचार करने की जरूरत है। **नागरिक समाज संगठन संबंधी मिथकः** एक समय नागरिक समाज संगठनों को सद्गुणों का प्रतिमान और इस बात का उदाहरण माना जाता था कि लोग अपना जीवन समाज सेवा में कैसे समर्पित कर सकते हैं। पिछले दो-तीन दशकों में यह धारणा उलट गई है। अब धारणा यह है कि आज कुछ संगठनों को छोड़ दीजिए, तो बाकी सभी संगठन अक्षम, अप्रभावी और भ्रष्ट हैं।

## तीर्थंकर चंद्रप्रभ व पार्श्वनाथ की जयंती 7 जनवरी 2024 पर विशेष

# काशी राजघराने में जन्में तीर्थंकर चंद्रप्रभु व पार्श्वनाथ की शिक्षाएं सिखाती हैं जीने की कला

**शाबाश इंडिया**

सर्वधर्म सदभाव की नगरी है काशी। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन लिखते हैं कि ''बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किंवदंतियों से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें, तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है।'' काशी यानि वाराणसी एक धार्मिक -सांस्कृतिक नगरी एवं पवित्र नगरी मानी जाती है क्योंकि इस नगरी में सभी सम्प्रदायों की आस्था जुड़ी है जिसमें जैन धर्मावलंबियों की आस्था भी जुड़ी है क्योंकि पवित्र गंगा नदी के बीच वसी नगरी काशी में चार तीर्थंकरों का जन्म हुआ, जन्म की ही नहीं चार- चार कल्याणक भी हुए हैं। सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ, अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ, ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांशनाथ और तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लेकर वाराणसी नगरी को पवित्र बनाया है।

मैंने अपने जीवन निर्माण के पांच वर्ष वाराणसी में व्यतीत किए हैं,इसलिए काशी की संस्कृति से मेरा निकटता से परिचय है।गंगा का पावन जल और शांत आनंदमयी घाटों का अनुभव कितना मनमोहक होता है शायद आप लोग जानते होगे, बनारस के कुछ अलग ही रहस्य हैं जो हर शहर से भिन्न है।

**बनारस का हर शाम इतना सुहाना लगे।**
**इसे भुलाने में कई सदियाँ कई जमाना लगे।।**

मेरा सौभाग्य रहा कि पवित्र गंगा किनारे सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्मभूमि से सुशोभित जैन घाट पर स्थित सुप्रसिद्ध स्याद्वाद महाविद्यालय में मुझे अध्ययन करने का अवसर मिला। ऐतिहासिक अवलोकन से स्पष्ट होता है कि जैन धर्म का प्रभाव भी इस नगरी पर रहा है। 'संयम' और 'सहनशीलता' के प्रतिमूर्ति जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में पौष कृष्णा एकादशी को हुआ था। तत्कालीन काशी नरेश महाराजा विश्वसेन आपके पिता एवं महारानी वामादेवी आपकी माता थीं। शहर के भेलुपुर इलाके में तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि है। यही वो जगह है जहाँ जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर की जन्म, कर्म और तप भूमि है। जो आज जैन धर्मावलम्बियों के लिए बड़ा स्थल है। यहां आज जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर का भव्य मंदिर है। पार्श्वनाथ के जन्म स्थल भेलूपुर मुहल्ले में विशाल, कलात्मक एवं मनोरम मन्दिर का निर्माण हुआ है। मन्दिर में काले पत्थरों से निर्मित चार फिट ऊंची पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। 6273 वर्ग फिट क्षेत्रफल में यह मन्दिर परिसर है। राजस्थानी कारीगरों द्वारा राजस्थानी पत्थरों से निर्मित राजस्थानी शैली का यह मन्दिर अदभुत एवं अद्वितीय है। मन्दिर के दिवारों पर शिल्पकारों द्वारा सुन्दर ढंग से कलात्मक चित्रों को दशार्या गया है। इस मंदिर में दर्शन के लिए हर रोज ढेरों श्रद्धालु आते हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने बुराइयों का परिष्कार कर अच्छा इंसान बनने का संस्कार भरा। पुरुषार्थ से भाग्य बदलने का सूत्र दिया। भगवान पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक और सामाजिक क्रांति के प्रणेता हैं। उन्होंने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दिया, जो अभूतपूर्व क्रांति थी। उनका कहना था कि हर व्यक्ति के प्रति सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें। उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़ें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है। भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं।इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है। ध्यान से देखने पर भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान महावीर का समवेत रूप एक सार्वभौम धर्म के प्रवर्तन का सुदृढ़ सरंजाम है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था। राजकुमार अवस्था में कमठ द्वारा काशी के गंगाघाट पर पंचाग्नि तप तथा यज्ञाग्नि की लकड़ी में जलते नाग-नागिनी का णमोकार मंत्र द्वार उद्धार कार्य की प्रसिद्ध घटना यह सब उनके द्वारा धार्मिक क्षेत्रों में हिंसा और अज्ञान विरोध और अहिंसा तथा विवेक की स्थापना का प्रतीक है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग-नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों में विहार किया। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिला में सुप्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र नैनागरी स्थित है जहाँ भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करूणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। पार्श्वनाथ की जयंती पर जहां वाराणसी सहित पूरे देश में जन्मोत्सव धूमधाम से श्रीजी की शोभायात्रा के साथ मनाया जाता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी उनके द्वारा प्रतिपादित जीने की कला और संदेश नितान्त प्रासंगिक है। जीवन के अंत में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन झारखंड स्थित सुप्रसिद्ध शाश्वत जैन तीर्थ श्री संवेदशिखर के स्वर्णभद्रकूट नामक पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया। इन्हीं की स्मृति में इस तीर्थ क्षेत्र के समीपस्थ स्टेशन का नाम पारसनाथ प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण देश के लाखों जैन धमार्नुयायी इस तीर्थ के दर्शन-पूजन हेतु निरंतर आते रहते हैं। **जयंती पर मांस की दुकान बंद करने के आदेश :** जैनधर्म के 23 तीर्थंकर पार्श्वनाथ की 2900 वी जन्म जयंती पर गोरखपुर के नगर आयुक्त व वाराणसी के महापौर ने नगर में पशुवध, मांस, मछली, मुर्गा, की दुकानें बंद रखने के आदेश जारी किए हैं। **गंगा नदी के तट पर बना हुआ चंद्रप्रभ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा:** आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभ का जन्म भी पौष कृष्ण एकादशी को ही राजघराने में हुआ था। इनके माता पिता बनने का सौभाग्य चंद्रावती के महाराजा महासेन और लक्ष्मणा देवी को मिला। भगवान चन्द्रप्रभु के जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक स्थली क्षेत्र सुरम्य गंगातट पर चन्द्रावती गढ़ के भग्नावशेषों के बीच स्थित है। क्षेत्र पर चैत्र कृष्णा 5 को वार्षिक मेला लगता है। गंगा किनारे चंद्रावती में आठवें तीर्थंकर चंद्राप्रभु स्वामी ने जन्म लिया था। वहां चंद्राप्रभु का भव्य मंदिर आस्था का केंद्र है लेकिन गंगा की कटान की वजह से यह तीर्थ बदहाल पड़ा है। वर्तमान मंदिर की वेदी में मूलनायक तीर्थंकर चंद्रप्रभ की श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा है। मंदिर का शिखर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। यहां से गंगा का मनोहारी दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है जो अवलोकनीय है। गंगा नदी के तट पर बना हुआ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा है । मंदिर का निर्माण प्रभुदास जैन ने किया था। इनके परिवारजन श्री अजय जैन, प्रशांत जैन आरा आदि आज भी इस क्षेत्र की देख-रेख में संलग्न हैं। जैन तीर्थंकरों के दर्शन के लिए वर्ष भर देश के कोने-कोने से लाखों की तादाद में जैन धर्मावलंबी काशी आते हैं। भगवान चंद्रप्रभ हमारे जीवन दर्शन के स्रोत हैं, प्रेरक आदर्श हैं। उन्होंने जैसा जीवन जीया, उसका हर अनुभव हमारे लिए साधना का प्रयोग बन गया। भगवान चंद्रप्रभ को इतिहास का स्वरूप धारण कराने में आचार्य समन्तभद्र स्वामी का बड़ा हाथ है। जब उन्हें भस्मक व्याधि हो गयी थी उस समय काशी में उनके साथ जो घटनाक्रम हुआ वह ऐतिहासिक था। इस ऐतिहासिक घटना ने जनमानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा और कलाकार चंद्रप्रभु की कलाकृतियां गढ़ने में तत्पर हो गए और श्रावक जन भगवान चंद्रप्रभु के चमत्कार के प्रति अधिक आस्थावान और विश्वस्त हो गए। चंद्रावती के अलावा देवगढ़ , खजुराहो, सोनागिर, तिजारा, ग्वालियर, श्रवणबेलगोला , बरनावा, मांगीतुंगी आदि में चंद्रप्रभु भगवान की प्राचीन व चमत्कारी प्रतिमाएं विराजमान हैं। तीर्थंकर चंद्रप्रभु अपनी अद्वितीय धवल रूप गरिमा में वीतरागता का वैभव बिखेरने के साथ अपने अद्वितीय अतिशय और चमत्कारों के कारण भी लोकप्रिय संकट मोचन रहे हैं। तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का आदर्श मानव को सावधान करता है, उसे जगाता है और कहता है कि हमारी तरफ देख, हमने राजा का वैभव को ठुकराया और आकिंचन व्रत अंगीकार किया और तू इस नाशवान माया की ममता में पागल हुए जा रहा है। **संरक्षण और संरक्षण की ओर सरकार ध्यान दे:** वाराणसी देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी का संसदीय क्षेत्र है।

**डॉ. सुनील जैन संचय**
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने, गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

# फागी कस्बे में आचार्य विनीत सागर जी महाराज ससंघ का हुआ भव्य मंगल प्रवेश

## पार्श्वनाथ चैत्यालय में आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोध मति माताजी ससंघ का हुआ भव्य मिलन

**फागी. शाबाश इंडिया**

कस्बे में आचार्य कल्याण सागर जी महाराज ग्वालियर वालों के शिष्य आचार्य विनीत सागर महाराज,एलक अनन्त सागर महाराज तथा संघस्थ बालब्रह्मचारिणी निर्मला दीदी ससंघ का जैन समाज फागी ने बेन्ड बाजों के द्वारा भव्य मंगल प्रवेश कराया तथा पादप्रक्षालन कर आरती करने के बाद त्रिमूर्ति मंदिर के संत भवन में ठहराया। जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में आचार्य संघ ने कस्बे के मुनि सुव्रतनाथ मंदिर, बीचला मंदिर, आदिनाथ मंदिर, तथा पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर सहित कस्बे के सभी जिनालयों के दर्शन किए। गोधा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में शीतकालीन वाचना में धर्म की प्रवाहना बढ़ा रही आर्यिका श्रुतमति माताजी,आर्यिका सुबोध मति माताजी,संघ का भव्य मिलन हुआ, तथा दोनों संघों में धर्म चर्चा हुई। कार्यक्रम में समाज सेवी सोहनलाल झंडा, हरकचंद पीपलू,पंडित संतोष बजाज, राजेंद्र चौधरी,पारस मोदी, विनोद कुमार मोदी, राकेश कठमाणा, पंकज कासलीवाल, कमलेश चोधरी,काना कलवाड़ा,गगन कलवाड़ा, बबलू कठमाणा तथा राजाबाबू गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

**राजाबाबू गोधा जैन**
**महासभा मीडिया**
**प्रवक्ता राजस्थान**

# संत श्री सुधा सागर कन्या आवासीय महाविद्यालय में शीतकालीन शिविर का आयोजन

**जयपुर. शाबाश इंडिया।** संत श्री सुधा सागर कन्या आवासीय महाविद्यालय में प्रतिवर्ष शीतकालीन शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शीतकालीन शिविर का आयोजन दिनांक 25से 31 दिसंबर तक किया गया जिसमें सुबह 6:00 बजे से 7:00 श्रीमती कविता द्वारा योग की कक्षाएं संचालित की गई। 12:30 से 1:30 बजे श्रीमती मंजू और श्रीमती मनोहर द्वारा आत्मरक्षा की कक्षा संचालित की गई । 2.00 से 3.00 बजे तक मेहंदी की कक्षा श्रीमती बबली श्रीमती सोनू श्रीमती ज्योति द्वारा आयोजित की गई। 3:30 से 4:30 बजे स्वर विज्ञान और अंक विद्या की कक्षा ब्रह्मचारी भैया संजय के द्वारा संचालित की गई। सौरभ भैया के द्वारा 2 दिन के लिए मोटिवेशनल स्पीच संचालित की गई।

# समाधि स्थली के प्रथम दर्शन : ब्र. सुनील भैया

**रोहित जैन.शाबाश इंडिया**

नसीराबाद। जगत पूज्य प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणि दिगम्बर जैन आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के दीक्षा गुरु प. पु. आचार्य ज्ञान सागर जी महामुनिराज की समाधी स्थली नसीराबाद मे प. पु. आचार्य विद्यासागर जी महारज के परम शिष्य बा. ब्र. सुनील भैया इंदौर ने आज दिनांक 05 जनवरी 2024 वार शुक्रवार को प्रथम दर्शन किये। प्रथम दर्शन करके भैया जी ने कहा नसीराबाद एक ऐसी पावन भूमि है जहा पर जगत पूज्य युग श्रेष्ठ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे महान संतो को दीक्षा देकर अपनी अंतिम श्वास जिन्होंने विसर्जित की। आज हमारे सतिशय पुण्य उदय से पावन भूमि की रज माथे पर लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज मैं बहुत आनंदित हु हमने वो उपलब्धि हासिल की जिसे पाने के लिए भव भव तक कही पर्याय लेनी और छोड़नी पडती है। भैया जी के साथ मे बिजयनगर से पधारे समाज श्रेष्ठी अजित कुमार पाटनी, अमित डोसी नसीराबाद से पत्रकार रोहित जैन ने भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। अजित पाटनी ने कहा की मैं बड़ा भाग्यशाली हु की अमित डोसी के साथ ब्र. सुनील भैया को प्रथम दर्शन करवाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ।

# सत्य भारती स्किल फेस्ट मूल रूप से सार्थक साबित हुआ

**जोधपुर. शाबाश इंडिया।** शिक्षा विभाग एवं भारती फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में पांच दिवसीय सत्य भारती स्किल फेस्ट राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय- कुई जोधा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दुधाबेरा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नारायण नगर में आयोजन की धूम मच गई जिसमें करीब 115 विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, स्किल फेस्ट में सभी विद्यार्थियों को सिलाई-कटाई और रीडिंग पासपोर्ट का काम सिखाया गया। एकेडमिक मेंटर पुनीत भटनागर ने बताया कि इन पांच दिवसीय स्किल फेस्ट के अंतर्गत विद्यार्थियों को उनके जीवन कौशल में काम आने वाली कई महत्वपूर्ण स्किल सिखाई गई, जिससे कि वह अपने भविष्य में आत्मनिर्भर रह सकें । इन पांच दिवसीय सत्य भारती स्किल फेस्ट के दौरान विद्यार्थियों में अंदर छुपे हुए कौशल को निखारने एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे कि वह भविष्य में अपने शिक्षकों, माता-पिता एवं देश का नाम रोशन कर सकें।

# टोंक से निमोला 28वीं विशाल पदयात्रा का आयोजन

**निमोला, टोंक. शाबाश इंडिया**

अतिशय क्षेत्र निमोला में दो दिवसीय मेले के तहत शनिवार को प्रातः 10:00 बजे पांच मंदिर पुरानी टोंक से पदयात्रा रवाना हुई। समाज के प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी राजेश अरिहंत ने बताया की पदयात्रियों ने पांचो मंदिर के दर्शन किए समाज के सूरजमल, संभीर मल, छुट्टनमल,कमल सोनी, नरेश चौधरी, विनोद बाकलीवाल, छोटे लाल,बाबू सेठी, पदम अलीयारी आदि ने सबको माला दुपट्टा पहना कर गाजे-बाजे के साथ पदयात्रा को रवाना किया। पदयात्री केसरिया ध्वज हाथों में लिए भगवान पार्श्वनाथ के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे । पदयात्रा कचोलिया , सोनवा ,अरनिया माल होते हुए निमोला पहुंची। पदयात्रा का कचोलिया ग्राम में महाशिव विद्या मंदिर के निदेशक अमृत लाल शर्मा द्वारा भव्य स्वागत किया गया, सोनवा पहुंचने पर पद यात्रियों ने सोनवा जैन मंदिर के दर्शन किए जहां पर स्थानीय समाज ने पदयात्रियों को अल्पाहार कराकर स्वागत किया। पदयात्री भगवान पारसनाथ के भजन गाते हुए निमोला पहुंचे। जहां सभी ने भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर श्री फल चढ़ाए पद यात्रियों में पुरानी टोंक, हाउसिंग बोर्ड, बड़ा कुआं, सिविल लाइन आदि क्षेत्र के श्रद्धालुओं सहित अनिल कासलीवाल, मनोज,पारस ,मनीष, जीतू, पंकज, शिखर, राहुल, लक्ष्मी, सुनीता, इंदिरा ,तृप्ति,बीना,रचना आदि श्रद्धालु मौजूद थे। सायंकाल भगवान पार्श्वनाथ की 108 दीपको से संगीतमय महाआरती की गई एवं भक्तामर का पाठ किया गया भजन संध्या में महिलाओं ने भक्ति नृत्य प्रस्तुत किए। रात्रि को टोंक, निवाई, मालपुरा, टोडा, नगर, नैनवा के गायक कलाकारों द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। अतिशय क्षेत्र निमोला के अध्यक्ष कपूरचंद पाटोदी एवं मंत्री बाबूलाल जैन ने बताया कि रविवार को प्रातः भगवान पारसनाथ का अभिषेक, शांतिधारा, शांति-मंडल विधान की पूजा, महाअर्ध्य एवं बोलियों के पश्चात श्री जी की विशाल रथयात्रा निमोला ग्राम में निकाली जाएगी तत्पश्चात श्री जी को समोशरण में विराजमान कर कलशाभिषेक किए जाएंगे।

# मुनि श्री प्रयोग सागर जी महाराज एवं मुनि प्रबोध सागर जी महाराज को किया ग्रंथ समर्पित

**सनावद. शाबाश इंडिया।** अ.भा.दि. जैन विद्वत परिषद द्वारा पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधा सागर महाराज के आशीर्वाद से प्रकाशित अनेकांत मनीषी प्रो. रमेश चंद जैन अभिनंदन ग्रंथ को पूज्य मुनि श्री प्रयोग सागर जी महाराज एवं मुनि प्रबोध सागर जी महाराज को समर्पित किया गया। ग्रंथ के संपादक डॉ जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर एवं डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर हैं। प्रबंध संपादक डॉ नरेंद्र जैन भारती, बालकराम चाचरिया, प्रियम जैन, शुभम जैन, ने ग्रंथ भेंट किया। मुनि द्वय ने ग्रंथ अवलोकन कर प्रकाशित सामग्री पर खुशी जाहिर की। प्रबंध संपादक डॉ नरेन्द्र जैन भारती ने बताया कि इस ग्रंथ में डॉ. रमेश चंद जैन द्वारा लिखित लगभग 50 वर्षों में जैन धर्म दर्शन संस्कृति और संस्कारों से संबंधित संपूर्ण मानव समाज के हित के लिए उपयोगी लेखो को संकलित कर प्रकाशित किया गया है। जिससे अहिंसा, शाकाहार और जीव दया में विश्वास रखने वालों लोगों को सम्यक दिशा निर्देश प्राप्त होगा।

# अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से...

**सफलताओं के सौ बाप होते हैं, और**
**असफलता तो अनाथ होती है..**
**संसार में कोई भी कार्य कठिन नहीं है,**
**हम ही आलसी और मन के गुलाम हो गये हैं..!**

राग और विराग, संसार और सन्यास, निवृत्ति और प्रवृति-मानव जीवन के मन की यही विशेषताएं हैं। कुछ चीजे हमें अपनी ओर खींचती है, और कुछ से हम दूरी बनाकर रखते हैं। मनुष्य के मन की तर्क शक्ति बड़ी प्रबल है। वह असत्य के पक्ष में जोरदार दलीलें दे सकता है और वह जीवन भर एक सत्य पर टिक नहीं पाता, क्योंकि परिवर्तन मनुष्य का स्वभाव और नियति है। उसकी यह प्रवृत्ति उसके पौरूष को अभिव्यक्त भी करती है,, लेकिन इसे हम पुरूषार्थ नहीं कह सकते हैं। रागी मन संसार के सृजन में दौड़ेगा और वैरागी मन निवृत्ति की ओर अग्रसर होगा। यह दुनिया निवृत्ति की ओर नहीं, प्रवृति की ओर इशारा करती है। रागी मन, कुछ और पाने की चाह में सारा जीवन तबाह कर देता है, पर मन तृप्त नहीं हो पाता है। सन्यास का मार्ग इच्छाओं को दहन करने का मार्ग है। जब तक वैरागी या सन्यासी अपनी इच्छाओं को होली के हवाले नहीं करता, तब तक उसका सन्यास का मार्ग फलीभूत भी नहीं होता। क्योंकि इच्छा ही हमारी सबसे बड़ी वासना है।

**-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद।**

## आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर **'शाबाश इंडिया'** आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।


**सम्पादकः राकेश जैन गोदिका**
**@ 94140 78380, 92140 78380**

**दैनिक ई-पेपर**
**शाबाश इंडिया**
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

# लोकोदय तीर्थक्षेत्र पर संपन्न हुआ छह दिवसीय 24 समवशरण कल्पद्रुम महामंडल विधान

आगरा. शाबाश इंडिया

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में आगरा मथुरा नेशनल हाईवे स्थित अन्तर्राष्ट्रीय लोकोदय तीर्थक्षेत्र की भूमि पर आगरा नगर के इतिहास में 1 जनवरी से सात दिवसीय 24 समवशरण श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन चल रहा है।जिसका समापन 6 जनवरी को विश्व शांति महायज्ञ एवं शिलान्यास समारोह के साथ हुआ। जहां विधान के छठवें अंतिम दिन सर्वप्रथम इन्द्र- इन्द्रणियों ने बाल ब्रह्मचारी प्रदीप भैय्या सुयश जी के कुशल निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ अष्ट द्रव की थाल सजाकर सहस्त्र नाम के 1008 अर्घ्य श्रीजी के समक्ष अर्पित कर विधान का संपन्न किया। विधान में मौजूद सभी इन्द्र-इन्द्रणियों ने संगीतकार के मधुर भजनों की संगीतमय में लहरियों के साथ नृत्य किया।इसके बाद सभी इंद्र-इंद्राणियो ने विधानाचार्य जी के कुशल निर्देशन में विश्व शांति महायज्ञ की कामना कर हवन में आहुति देते हुए छह दिवसीय विधान का समापन किया। तत्पश्चात आगरा के चौबीस सौभाग्यशाली परिवारों के द्वारा विधानाचार्यजी के कुशल निर्देश में अंतरराष्ट्रीय लोकोदय तीर्थक्षेत्र में मुख्य विशाल एवं भव्य जिनालय व त्रिकाल चौबीसी जिनालय का भूमि शिलान्यास की मांगलिक क्रियाएं संपन्न की। इसके बाद मुनिपुंगवश्री का जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम सायः 5:30 से 6:30 बजे तक आयोजित किया गया। जिसमें भक्तों ने अपनी जिज्ञासा का समाधान गुरु गुरुवर से किया।इस दौरान भक्तों का उत्साह देखते ही बना रहा था। इस विधान का आनंद हजारों की संख्या में आगरा जैन समाज के लोगों ने उठाया। विधान का संचालन मनोज जैन बाकलीवल ने किया। मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय लोकोदय तीर्थक्षेत्र की भूमि पर 7 जनवरी को दोपहर 1:00 बजे से मुनिपुंगवश्री सुधासागर जी महाराज ससंघ का भव्य पिंछी परिवर्तन समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर,प्रदीप जैन पीएनसी,मनोज जैन

बाकलीवाल नीरज जैन जिनवाणी निर्मल मोठ्या, पन्नालाल बैनाड़ा, हीरालाल बैनाड़ा,राजेश बैनाड़ा विवेक बैनाड़ा,राजेश सेठी,अमित जैन बॉबी, रूपेश जैन,अनिल जैन शास्त्री,राजेश जैन,शिखरचंद जैन सिंघई,मीडिया प्रभारी शुभम जैन,राहुल जैन,मुकेश जैन बिटुमिन,नरेंद्र जैन,अशोक जैन, शैलेंद्र जैन,अनिल जैन,नरेश जैन, पंकज जैन सीटीवी,समस्त आगरा जैन समाज के लोग एवं बाहर से पधारे गुरुभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : शुभम जैन

# नमिता जैन को डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि मिली

**जयपुर. शाबाश इंडिया।** नमिता जैन पुत्री संतोष जैन साधुवाला असिस्टेंट प्रोफेसर जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी सीतापुरा जयपुर को आज डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि मिल गई। कानून की उच्चतम डिग्री प्रदान की गई। उन्होंने कानून में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) भी उत्तीर्ण कर ली है।

# निःशुल्क परामर्श शिविर में 125 रोगियों ने लिया चिकित्सा परामर्श

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर व रोटरी क्लब नसीराबाद के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को गांधी चौक स्थित अग्रवाल धर्मशाला में सम्पन्न हुई निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर में 125 रोगियों का पंजीयन कर उन्हें निःशुल्क परामर्श एवं दवाइयां दी गई। शिविर संयोजक अमित तापड़िया के अनुसार शिविर में हृदय रोग, यूरोलॉजी व किडनी रोग,जनरल मेडिसिन, जनरल सर्जरी, जोड़ प्रत्यारोपण व हड्डी रोग, नाक-कान-गला रोग तथा चर्म एवं यौन रोग के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने रोगियों की जांच कर परामर्श दिया व आवश्यक दवाएं दी गई। शिविर में 12 रोगियों का सर्जरी के लिए चयन किया जिन्हें रविवार को महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर ले जाया जायेगा। शिविर में आवश्यकता अनुसार रोगियों की ई सी जी की गई और ब्लड शुगर की जांच की गई।

# आचार्य चैत्य सागर एवं आचार्य सौरभ सागर महाराज का हवामहल पर हुआ भव्य मिलन

## रविवार को 108 कलशों से होंगे भगवान पार्श्वनाथ के अभिषेक

**जयपुर. शाबाश इंडिया।** दिगम्बर जैन आचार्य चैत्य सागर महाराज एवं आचार्य सौरभ सागर महाराज ससंघ का शनिवार को भव्य मिलन हुआ। इस मौके पर बड़ी संख्या में जैन बन्धु शामिल हुए तथा आसपास का वातावरण जयकारों से गुंजायमान हो उठा। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक आचार्य सौरभ सागर महाराज शास्त्रीनगर जैन मंदिर से मंगल विहार करते हुए बडी चौपड़ पर हवामहल के बाहर पहुचे जहा आचार्य चैत्य सागर महाराज ससंघ ने उनकी भव्य अगवानी की तथा दोनो संघों का जयकारों के बीच भव्य मंगल मिलन हुआ। दोनों आचार्य संघ जुलूस के साथ रवाना होकर ख्वास जी का रास्ता स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सोनियान में मंगल प्रवेश हुआ। जहां मंदिर दर्शन के बाद आयोजित धर्म सभा में मंगल प्रवचन हुए। अध्यक्ष कमल दीवान, उपाध्यक्ष विनोद बिलाला, मंत्री संजय गोधा एवं सह मंत्री रवि पाण्डया आदि ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। दोनों आचार्यों ने भगवान पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभू के रविवार को जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव में शामिल होने का आव्हान किया। इस मौके पर राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, राजस्थान जैन सभा जयपुर के महामंत्री मनीष बैद, धर्म जागृति संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष पदम बिलाला, श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद के मंत्री सुनील बख्शी, आलोक तिजारिया, गजेन्द्र बडजात्या, सहित बडी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजनों ने श्री फल भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया ।

# भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में सहस्त्र कूट विज्ञा तीर्थ स्थल पर किया पौधारोपण

## भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव आज

**गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया**

जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक के उपलक्ष्य पर सहस्त्र कूट जिनालय विज्ञा तीर्थ गुन्सी में भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी संघ के सानिध्य में एवं जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने मुख्य रूप से डबल्स चांदनी पुष्प, सहित गुलमोहर, धनिया, का पौधा लगाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला प्रमुख सरोज बंसल , एवं अध्यक्षता नगर निगम ग्रेटर प्रतिनिधि चेतन निमोडिया एवं विशिष्ट अतिथि जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा एवं कार्याध्यक्ष सुनील भाणजा कार्यक्रम संयोजक विमल जौंला थे। कार्यक्रम से पूर्व अतिथियों ने गुरु मां को श्री फल चडाया और पूजा अर्चना की। इस दौरान गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ने सभी को भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण विमल पाटनी शशी सोगानी एवं संजय सोगानी ने किया। इस अवसर पर विजय गंगवाल विमल सोगानी संजय सोगानी दिनेश जैन सवाईमाधोपुर सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा अर्चना कर अभिषेक किए। इस अवसर पर आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा कि वृक्ष प्रकृति की एक अनमोल देन है और यही वजह है कि भारत में वृक्षों को प्राचीन काल से ही पूजा जाता रहा है। आज भी यह प्रथा कायम है। वृक्ष हमारे परम हितैसी निःस्वार्थ सहायक अभिन्न मित्र हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली में वृक्षों का अत्यधिक महत्व है। वृक्षों के बिना अधिकांश जीवों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वृक्षों से ढके पहाड़, फल और फूलों से लदे वृक्ष, बाग, बगीचे मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हैं और मन को शांति प्रदान करते हैं। वृक्षों से अनेकों लाभ हैं जैसे वृक्ष अपनी भोजन प्रक्रिया के दौरान वातावरण से कार्बन डाइ ऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जिससे अनेक जीवों का जीवन संभव हो पाता है। जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला ने बताया कि विज्ञा तीर्थ एवं बड़ा जैन मंदिर, शिवाजी कालोनी स्थित दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर सहित सभी जिनालयों में भगवान पार्श्वनाथ जी का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा।

## विद्याधर नगर में श्रीमद भागवत ज्ञानयज्ञ चौथा दिन

# पालनहार है प्रभू: आचार्यश्री मृदुल कृष्ण

## धूमधाम से मनाया नंदोत्सव,भक्तों ने लूटी उछाल

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

भागवत मिशन परिवार के बैनर तले गिर्राज संघ परिवार विश्वकर्मा,जयपुर परिवार के 25वें वार्षिकोत्सव पर विद्याधर नगर सेक्टर-7 अग्रसेन हॉस्पीटल के पीछे स्थित मैदान पर चल रहे। श्रीमद भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के चौथे दिन शनिवार को भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव नंदोत्सव के रूप में मनाया गया। इस मौके पर भक्तों ने नंद के आनंद भयो,जय कन्हैया लाल की...यशोदा जायो ललना..जैसे बधाई गीतों के बीच फल,खिलौने,मेवे व फल की जमकर उछाल लुटाई। इस दौरान कार्यक्रम स्थल भक्ति

और आस्था की त्रिवेणी में डुबा नजर आया। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के स्वायत शासन मंत्री झावर सिंह खर्रा, ओसिया विधायक भेराराम सिहोर, जिला न्यायधीश जयपुर ( राज्य आयोग )अशोक शर्मा, राजस्थान उच्च न्यायलय जयपुर बेंच सीपीसी के रजिस्ट्रार बालकृष्ण गोयल, जिला परिवहन अधिकारी रमेश पांडे व राजस्थान उच्च न्यायलय जयपुर के निदेशक संजय शर्मा कथा स्थल पहुंचे और कथा का श्रमण कर महाराजश्री से आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्य गोस्वामी श्री मृदुल कृष्ण जी महाराज जी ने कहा कि भक्त के विश्वास को पूर्ण करते है प्रभु। भक्त के भाव को, अपने इष्ट के प्रति भक्त की आस्था को केवल प्रभु ही समझ सकते हैं,इसीलिए जीव को अपना दुख संसार के सामने नहीं केवल प्रभु के सामने ही प्रकट करना चाहिए। प्रभु पालनहार है, वे शरण में आये भक्त के सारे दुखों को हर लेते है। आचार्य गोस्वामी श्री मृदुल कृष्ण जी महाराज जी ने कहा कि भगवान का परम भक्त प्रहलाद, जिसे कि पिता हिरण्यकशिपु के ने अति भयंकर कष्ट दिए,यहां तक कि श्री प्रहलाद जी को विष पिलाया गया।

# युवाओं को खेल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का अवसर दे रही क्रिकेट प्रतियोगिता

रमेश भार्गव। शाबाश इंडिया

एलनाबाद, । जेजेपी के ऐलनाबाद हलकाध्यक्ष अनिल कासनियां व व्यापार प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष अंजनी लढा ने कहा कि जेजेपी ने ग्रामीण युवाओं को अपनी प्रतिभा तराशने के लिए ही क्रिकेट प्रतियोगिता के रूप में मंच प्रदान किया है। वे जननायक चौधरी देवीलाल ग्रामीण क्रिकेट टूर्नामेंट माधोसिंघाना ग्राउंड के तीसरे दिन प्रतियोगिता के अवसर पर खिलाड़ियों को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम के दौरान गांव बेहरवाला के सरपंच ओमप्रकाश ख्यालिया बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। इस अवसर पर अनिल कासनियां व अंजनी लढा ने बताया कि जेजेपी का इस टूर्नामेंट को करवाने का मकसद युवाओं को नशे से दूर रखना है। कासनीया व लढ़ा ने बताया कि हरियाणा प्रदेश के उपमुख्यमंत्री दुष्यन्त चौटाला ने हमेशा युवाओं के ही बारे में सोचा है उन्होंने बताया कि पूल मैचों के तीसरे दिन शनिवार को माधोसिंघाना मैदान पर पहला मैच अमृतसर कलां व कर्मशाना के बीच खेला गया व रोमांचक मुकाबले में अमृतसर कलां ने जीत दर्ज की।

# भाजपा युवा मोर्चा की विकसित भारत अम्बेसेडर कार्यशाला सम्पन्न

अमन जैन कोटखावादा. शाबाश इंडिया

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय पर विकसित भारत एवम नमो एप की प्रदेश स्तरीय कार्यशाला का आयोजन प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला में 2047 में विकसित भारत के लक्ष्यों के प्रति युवाओ की भागीदारी प्रमुख विषय रहा। कार्यशाला में प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने युवाओ को विकसित भारत एंबेसडर बनकर मोदी के समर्थ भारत और सशक्त भारत के सपने को साकार करने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम के अंतर्गत युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अंकित गुर्जर चेची ने युवा मोर्चा के नव मतदाता अभियान को लेकर युवाओं से सम्बोधन किया साथ ही युवाओं को उद्बोधन दिया की वे नरेंद्र मोदी के समर्थ भारत सशक्त युवा के सपने को साकार करने के लिए नए प्रयास करे, एवम्विकसित भारत के एम्बेसडर बन सभी युवा कार्यकर्ता यह सुनिश्चित करें कि भाजपा सरकार की केंद्रीय योजनाओं का सीधा लाभ और अधिक आम जन को मिले। कार्यक्रम में प्रदेश उपाध्यक्ष श्रवण बगड़ी, नरेंद्र कटारा, जयपुर प्रभारी नरेश बंसल, युवा मोर्चा शहर अध्यक्ष सुरेंद्र पुरुवंशी सहित सेकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर चौमूं का वार्षिक उत्सव मनाया

चौमूं. शाबाश इंडिया

श्री जैन श्वेताम्बर तप्पागछ संघ जयपुर के अधिनस्थ लक्ष्मीनाथ जी का चौक चौमूं स्थित श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर का वार्षिक उत्सव और भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक महाउत्सव मनाया गया। इस अवसर पर भगवान का वरघोड़ा गाजे बाजे और रथ के साथ निकला गया। वरघोड़े का जुलूस रावनगेट से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न बाजारों में से होते हुए मंदिर पोहचा। विभिन स्थानो पर जैन श्रावक श्राविकाओ ने रथ में सवार भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा की आरती उतारी। जुलूस के मंदिर पोहचने के बाद पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा श्री तपागज श्राविका सघ के द्वार पढाई गई। पूजा उपप्रांत अयोजित समारोह मैं मुख्य अतिथि चौमूं विधायिका डॉ. शिखा मिल बराला का साफा पहन कर और शॉल ओढ़ा कर श्रीमती मीना कटारिया ने स्वागत किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि किशनगढ़ रेनवाल नगरपालिका के अध्यक्ष श्री अमित ओसवाल का स्वागत दीन दयाल जी जैन के द्वारा किया गया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के युग में विश्व शांति के लिए जैन धर्म के सिद्धांत की सार्वभौमिक प्रस्तुति है और यही कारण है कि पूरी दुनिया में जैन धर्म अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने पार्श्वनाथ मंदिर के जीनोद्धार और विकास के झूठ भी संपूर्ण संयोग का आश्वासन दिया। श्री संघ की ओर से स्थानिय दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष श्री राजेंद्र जी बडजात्या का सम्मान श्री महेश जी जैन के द्वार किया गया एवं श्री दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता श्री पंकज जैन का स्वागत संघ मंत्री श्री प्रवीण जी नहाटा के द्वार किया गया। व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री पदम चंद्र बडजात्या का स्वागत संघ के अध्यक्ष श्री महावीर चंद्र मेहता के द्वारा किया गया।

# दो दिवसीय स्वयंसिद्धा प्रदर्शनी का हुआ शुभारंभ

**अमित गोधा. शाबाश इंडिया**

ब्यावर। लघु उद्योग भारती, ब्यावर की महिला शाखा के तत्वावधान में आज से 6 व 7 जनवरी 2024 को दो दिवसीय ''स्वयंसिद्धा उत्तरायण उमंग'' प्रदर्शनी का उदघाटन किया गया । आत्मनिर्भर भारत की पहचान और महिला उत्थान थीम पर शुरू हुई इस प्रदर्शनी में राजस्थान की 50 से अधिक महिला उद्यमियों द्वारा भाग लिया जा रहा है, जो अपने-अपने उत्पाद का प्रदर्शन इस प्रदर्शनी में करेंगी। इस प्रदर्शनी में ब्यावर शहर के अलावा अजमेर, पाली, किशनगढ़, जयपुर, जोधपुर, चित्तौड़ सहित कई शहरों के उद्यमी सम्मिलित हो रहे हैं। महिला शाखा अध्यक्षा अर्पिता शर्मा ने अपने उद्घाटनीय भाषण में बताया कि इस प्रदर्शनी में हम नवीनतम कला, संस्कृति, पहनावा, नई तकनीकें व नए स्किल्ड खेलों को सांझा कर रहे हैं। इस प्रदर्शनी से हम महिला सोच को नई दिशा और नए विचारों से हम और नए सृजनात्मक संग्रहों के साथ भागीदार बनाने में कामयाब होने जा रहे हैं। प्रदर्शनी संयोजिका कविता नाहर और शोभन्ता मेहता ने बताया कि **Exhibitior** का ज्यादा से ज्यादा व्यापार हो, इसलिए नगर में राशि देकर कूपनों का विक्रय किया गया जिन महिलाओं के पास प्रोडक्ट नही है, उन्हें एक दिशा देने का प्रयास भी इस प्रदर्शनी के माध्यम से किया गया है। मुख्य शाखा से प्रदर्शनी संयोजक रवि झंवर ने बताया कि स्टॉल की संख्या की अधिकता के कारण प्रदर्शनी स्थल पर होल 1 व 2 का प्रावधान किया गया है। मुख्य शाखा अध्यक्ष सचिन नाहर ने बताया कि इस प्रदर्शनी में सामान्य प्रकार की प्रदर्शनियों के साथ साथ वुडन फर्नीचर, सोलर, फूड प्रोसेसिंग यूनिट, बैंक ऑफ इंडिया की सिडबी और यू ग्रो फाइनेंस कंपनी की सेवाएं भी उपलब्ध हैं।


प्रबन्धकारिणी समिति चुनाव–2024
कीर्ति नगर जैन मंदिर

अनुभवी व्यक्तियों का लाभ, नव युवकों का साथ
भामाशाहों का विश्वास, मंदिर जी का विकास

बैलेट नं. 1
अरूण काला (मटरू)
अध्यक्ष

बैलेट नं. 2
प्रेमकुमार जैन
उपाध्यक्ष

बैलेट नं. 1
जगदीश जैन
महामंत्री

बैलेट नं. 1
राजकुमार छाबड़ा
मंत्री

बैलेट नं. 2
सुरेन्द्र कु. जैन
कोषाध्यक्ष

बैलेट नं. 1
आशीष बैद
प्रचार प्रसार मंत्री

बैलेट नं. 1
राजेन्द्र पाटनी
सांस्कृतिक मंत्री

कार्यकारिणी सदस्य

बैलेट नं. 2
भागचन्द जैन

बैलेट नं. 11
उम्मेद मल पाण्ड्या

बैलेट नं. 4
मनोज छाबड़ा

बैलेट नं. 8
रमेश पाटनी

बैलेट नं. 5
मनीष शाह

बैलेट नं. 7
नवनीत सौगाणी



दिगम्बर जैन समाज बापू नगर सम्भाग
कार्यालयः श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय, बी-21 ए, गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर- 302015

नव वर्ष स्नेह मिलन समारोह

रक्तदान एवं चिकित्सा शिविर

रविवार, 7 जनवरी 2024
समयः प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक
स्थानः दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी, नारायण सिंह सर्किल, जयपुर

शिविर में राजस्थान अस्पताल के निम्न विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध रहेंगी...

| | | |
|---|---|---|
| हृदय रोग विशेषज्ञ | फिजीशियन | हड्डी रोग विशेषज्ञ |
| डॉ. गोविंद एन शर्मा | डॉ. डी के जैन | डॉ. जितेश जैन |
| पल्मोनोलॉजिस्ट | स्त्री रोग विशेषज्ञ | नैत्र रोग विशेषज्ञ |
| डॉ. मधुर जोशी | डॉ. शिल्पा जेतवानी | डॉ. निकिता जैन |

शिविर में उपलब्ध निःशुल्क जांचें
नोटः–1. जांच करवाने हेतु खाली पेट आना उचित रहेगा।
2.रोगी अपने ईलाज संबंधित पूर्व रिपोर्ट व डॉक्टर की पर्ची साथ लेकर आवें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| बीएमडी | शुगर | लिपिड प्रोफाइल | ई.सी.जी. |
| पीएफटी | बीपी | वेट | हाईट |

विशेष
डॉ. पीयूष त्रिवेदी
एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ

सभी रक्तदाताओं को यातायात अवेयरनेस को ध्यान में रखते हुए ISI मार्का हेलमेट भेंट किए जाएंगे

रक्तदान शिविर उद्घाटनकर्ता
हाड़ालोक हितकारी ट्रस्ट
तिलक नगर, जयपुर

चिकित्सा शिविर उद्घाटनकर्ता
डॉ. पी सी जैन
बापू नगर, जयपुर

शिविर प्रभारी
डॉ. जी. सी. जैन 9982498221
राकेश गोदिका 9414078380

सहप्रभारीः- ई. बलवीर जैन, श्रीमती बबीता जैन, रोहित जैन, पवन पाटनी, अनिल संघी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उमरावमल संघी अध्यक्ष | ज्ञानचन्द झांझरी उपाध्यक्ष | निर्मल कुमार संघी संयुक्त मंत्री | सीए बी.के. जैन कोषाध्यक्ष | डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन मानद मंत्री |

समारोह समन्वयकः- सुरेन्द्र कुमार मोदी, महावीर कुमार जैन, संजय पाटनी, रमेश बोहरा